

10
दामोदर दास वीरा
ग्राम। भरूच

यह दामोदर दास वीरा नाथ भाई जी के भांजे थे यह विशुद्ध भावी अलौकिक लौकिक तो कुछ जानते ही नहीं थे आगे होने वाले या हो गए सब लीला का इनको पूर्व में ही ज्ञान हो जाता था और हमेशा स्वरूप आसक्त रहते
जब यह भरूच में थे वहां पर सब जनों को कहा कि ठाकुर जी कश्मीर पधार गए हैं जब बाद में सूचना आई तब पता लगा कि उन्होंने जो कहा सब सही है जो जो गोकुल जी में हुआ वह सब दामोदरदास भाई जी ने भरूच में बैठे ही सब वैष्णव को बताया और कहा कि गोकुल में बहुत क्लेश हो रहा है
यह सब बात सब वैष्णव ने लिख कर के रखी थी बाद में वैसा ही समाचार गोकुल से आया

एक समय दामोदरदास भाई ठाकुर जी के पास एकांत देख कर के गए

ठाकुर जी श्री जी सुख से सुख सेज्या पर बिराज रहे थे
वहां जाकर दामोदर दास ने विनती करी जय राज, महाराज, मेरा एक मनोरथ है -आप अपने चरणारविंद मेरे उर पर धरो

तब प्रभु जी ने कहा यह तो नित्य ही धरे हैं तब फिर विनती करी राज ऐसे नहीं बाहर भीतर मेरे हृदय के विषय धरो

यह सुनके ठाकुर जी ने अपने चरणारविंद इनको दिए दामोदरदास भाई ने उनको लेकर नेत्रों पर लगाए और हृदय से चिपका लिए
उस समय के सुख को क्या कहें इन्होंने ऐसे अनुभव अनेक बार अनेक तरह के किए हैं यह भाग्यवान बहुत प्रतिष्ठित थे और प्राण प्रभु इनके ऊपर बहुत कृपा रखते थे उनके ऊपर बहुत स्नेह रखते बहुत मान रखते बाद में ठाकुर जी ने मोहन भाई जी को आज्ञा दे करके इनको अपने पास चरणारविंद में बुला लिया यह सदा चरण में ही निवास करे हैं
इनके भाग्य को क्या कहिए

11
माधवदास
ग्राम सुल्तानपुर

माधवदास भाई जी का स्वभाव बहुत सरल गंभीर और प्रभु के स्वरूप में ही आसक्त अनन्य भाव अपने धर्म को गुप्त करके रहते थे
भीतर का आचरण और धर्म प्रगट में कभी किसी को जताया ही नहीं उत्तम भगवदीओं के संग के बिना कभी नहीं रहते थे
स्वरूप रस में मन डूबा रहता था जब यहां से सुल्तानपुर गए और वहां ऐसे समाचार सुने की ठाकुर जी कश्मीर पधार गए हैं तब माधवदास भाई जी को अपने शरीर की सोधी सही नहीं विकल दशा में हो गए और कहने लगे हाय-हाय अब क्या होगा किस रीत से वहां पर प्रभु रहेंगे वहां तो बहुत विपरीत परिस्थितियां हैं

ऐसी ज्वाला अंग अंग में लग गई और अपने शरीर की अवज्ञा करी, जलपान किया नहीं
ऐसे ही सो गए फिर निद्रा में डूबे तब ठाकुर जी ने उनके स्वप्न में दर्शन देकर के इनका समाधान किया और कहा कि तुम कोई बात की चिंता ना करो मैं फिर जल्दी आऊंगा ठाकुर जी ने स्वयं जलपान का गढ़वा लेकर माधवदास भाई के हाथ में दिया और कहा जलपान करो ऐसे कह के प्रभु ने इनको समझाया ऐसे कृपा पात्र भगवदीओं के संग के बिना रहते ही नहीं थे
स्वरूप नेष्टिक, स्वरूप के रस में ही डूबे रहते इनके संगी मोहन भाई, रतन बाई भली बाई राज बाई भक्तराज सो भाग्यवान भगवदीयो का इनको संग था

इन्होंने जब स्वरूप की वियोग अवस्था देखी तो अपना विरह कोई को बाहर जनाया नहीं
जहां सुदी वीर बाई जी ने मोहन भाई को अपने जाने का समाचार देने की आज्ञा दी वहां तक तो स्वयं की स्थिति राखी और इनके काज के पूरा होते ही देह छोड़कर प्रभु के पास चले गए और ठाकुर जी के श्रीमुख के दर्शन किए इनके भाव और भाग्य को क्या कहें

12
राई बाई
ग्राम कपडवणज

ये राई बाई ठाकुर जी के दर्शन करने के बाद ठाकुर जी के स्वरूप में ही आसक्त हो गए

रस के भाव से भरी अति गुप्त भाव उपाधि रहित, रसात्मक भाव से सेवा करते । श्री गोकुल में निकट ही रहते । नेत्र में से जल की धारा बहती रहती इस प्रकार से श्रीमुख के दर्शन करते । प्रथम पहले एक बार स्वप्न में गंगा जी ने आकर इनसे विनती करी कि तुम मेरी विनती ठाकुर जी से करो के एक बार करुणा करके मुझे दर्शन देवे । फिर समय देख कर के जब प्राण प्रभु बड़ी सैया जी के पास बिराज रहे थे वहां एकांत समय में राई बाई ने आकर के प्रभु से विनती करी की गंगा जी मेरे को कहलवाई है की ठाकुर जी एक बार गंगा जी को दर्शन देवे। ऐसे स्वप्न में आकर कह कर गई है ।

राज बाई ने कहा प्रभु एक बार दर्शन दीजिए यह मेरी विनती है फिर राज जो उचित हुए सो करो

यह सुनके प्रभु चुप रहे कोई उत्तर दिए नहीं फिर कितने दिवस बाद गंगा जी ने आकर के कहीं के आप मेरी विनती करो कि प्रभु मुझे दर्शन देवे

फिर राई बाई ने समय देखकर विनती करी तब प्रभु जी कृपा रस से ढल आए और कहीं की यह बात कैसे बन सकी है ,? मैं वहां जाऊं कैसे मेरे साथ तो बहुत समृद्धि है । सब को लेकर मैं कैसे जाऊं

यह प्रसंग इस तरह से बना

ठाकुर जी ने जब अवस्था धारण किया तो राई बाई को श्री गुसाई जी ने स्वप्न में आज्ञाकारी के एक कटोरा घी का भरो उसमें प्रभु का श्रीमुख का प्रतिबिंब दिखाओ और ₹1 उसमें डालो और ब्राह्मण को दान करें यह क्लेश शांत होए ऐसा उपाय करो तो राई बाई

जागी आकर के कटोरा घी का भरा उसमें रुपया धरा प्रभु के श्रीमुख के आगे
धरके ब्राह्मण को दिया ऐसे वात्सल्यता अनेक प्रकार की करी
प्रभु के सुख के लिए अनेक उपाय किए इनका तो बहुत विस्तार है

स्वरूप के अभाव की अवस्था में अपने देह की खूब अवज्ञा और तिरस्कार
करके जलपान का त्याग कर दिया
सब कहे के जल लेवो तो बोले जल कैसे लेऊ चरणामृत नहीं है

तब अन्य लोगों ने सूखा चरणामृत ला करके दिया
तब राय बाई बोले यह नहीं मैंने तो मेरे प्रभु का गीला चरणामृत ही सदैव लिया
है वह लाओ , नहीं तो कोई कुछ नहीं बोलेगा

यह असहनीय वीरह में डूब गए और देह छोड़ के चरणारविन्द में जा पहुंचे और
श्री मुख के दर्शन किए
इन राई बाई के भाव और भाग्य को क्या कहें

13
कनका दे
ग्राम कपडवणज

यह कनका दे जी वैष्णव में शिरोमणि इनके आचार धर्म अनन्यता वात्सल्य और सात्विक स्वभाव स्वरूपासक्त थे रात दिवस ठाकुर जी के सुख का ही विचार करते रहते थे

इनके संग अन्य वैष्णव भी इस रास्ते पर आ गए

जब वीप्रयोग की अवस्था आई तब दे

दर्शन का अभाव हो गया तो कनका दे जि क्लेश में रहने लगी

श्री जमुना जी के तरफ गए फिर वहां गोकुल अपने घर आ गए ,बहुत आरत से भरी शरीर में चैन पड़े नहीं

फिर कैसे-कैसे विकल होकर के आगरा गए मोहन भाई जी के पास वहां पर विनती करी मैं क्या करूं ? मोहन भाई जी ने कहा

10 दिवस में जो जाएंगे ऊन सबको प्रभु का संगम प्राप्त होगा उन्हें कोई अंतराय नहीं रहेगा

यह सुन कर के फिर वापस गोकुल आ गए घर आ गए सोच में लगने लगे क्या प्रकार करूं ? कैसे जाऊं ?

कैसे जाकर कैसे मैं श्रीमुख के दर्शन करूं ? मोहन भाई जी ने जो श्रीमुख से कहा वह सुना

एक स्वरूप बिना सब बाधक तो सेवा की क्या चली
ऐसे ठाकुर जी के वचन उनको याद थे यह धर्म का इन्होंने आचरण किया विलंब सहन किया नहीं और श्री चरण में जाकर श्री मुख के दर्शन किए ऐसे उत्तम भावी भगवदीयो के भाव और भाग्य को क्या कहें